डॉ. अजय शर्मा जी और उनका साहित्य:

Dr. Ajay Sharma ji Aur unka Sahitya

Harpreet Singh

Research Scholar, Singhania University, Rajasthan, India

प्रस्तावना :

डॉ. अजय शर्मा जी हिन्दी के प्रतिष्ठित कथाकार हैं। इनका 'लकीर दे आर पार' (पंजाबी कहानी संग्रह) क--त में प्रकाशित हुआ। इनके छः उपन्यास 'चेहरा और परछाई' (हिन्दी उपन्यास) ख्क, 'खुली हुई खिड़की' (हिन्दी उपन्यास) ख्ख, 'आकाश का सच' (हिन्दी उपन्यास) ख्फ, 'बसरा की गलिया ' (हिन्दी उपन्यास) ख्ग, 'शहर पर लगी आँखें' (हिन्दी उपन्यास) ख्क में प्रकाशित हो चुके हैं। इनके दो उपन्यास 'नौं दिशाएं' और 'राख का परिंदा' प्रकाशनाधीन कृटियां हैं। इन्होंने अŽदुल्ला हुसैन का पाकिस्तानी उपन्यास 'वापसी का सफर' पंजाबी से हिन्दी में दैनिक जागरण जालंधर के लिए क्रमवार अनुदित किया। डॉ. अजय शर्मा का एक उपन्यास 'बसरा की गलियां' गुरू नानक देव विश्वविद्यालय अमृतसर एम.ए. भाग -क के कोर्स में शमिल हैं। इनकी कृटियों पर करीब क्ख एम. फिल हो चुकी हैं।

उनका रचना संसार यथार्थ और सर्जना का मविकांचन संयोग हैं। उनके उपन्यास न तो शुद्ध वर्तमान में स्थित हैं और न ही इतिहास के दायरे में खो जाने वाले हैं और न ही अनदेखे भविष्य की और दौड़ने वाले। वह तो अपनी रचनाओं में समय को प्रवाह रूप में प्रस्तुत करते हैं। वस्तुतः इस काल प्रवाह के सांतत्यक द्वारा वे अपनी रचनाओं में भारतीय मूल्यों की स्थापना करना चाहते हैं। डॉ. अजय शर्मा जी पंजाब के हिन्दी उपन्यास लेखन में अपने हस्ताक्षर 'चेहरा और परछाई' द्वारा कर चुके हैं। लेखक ने इसमें वास्तविक दुनिया और गलैमर की दुनियां की चकाचौंध में चेहरे पर विकृत परछाई के प्रभुत्व को बडें ही सूक्ष्म ढंग से चित्रित किया है। जिन्दगी में कुछ बन सकने की चाहत और क्षितिज को छू लेने की लालसा के विपरीत जूझता कथानायक जीवन की विसंगतियों से परिचित करवा जाता है और परिस्थितियों का सूक्ष्म चित्रण करता है। जिससे गुजर कर आज का मनुष्य निराशा के गर्त में गिर जाता है।

डॉ. अजय शर्मा जी का दूसरा उपन्यास '□ुली हुई खिड़की' □ी केवल जीवन की कतरन नहीं, बल्कि जिन्दगी की कतरनों को खूबसूरत ढंग से सी-परो कर पेश करने का सश€त माध्यम है। खुली हुई खिड़की की नायिका इन कतरनों को अजीवन सहेजती है और डरती है कि कहीं रेशम पर जूट का पैबन्द न लग जाए। पति चला जाता है उसे आधी अथूरी छोड कर। स्मृतियों घेरती हैं और वह दिवास्वप्न में डूबी रहती है। हकीकत की खिड़कीयां थीरे थीरे खुलती है। जेठ और भाई सहारा तो नहीं बनते, बल्कि सहारा बनने वाली कड़ियों को भी तोड़ने की कोशिश करते हैं। केवल डा€टर एक ऐसा पात्र है, जो भंवर में फंसी हुई नैया को किनारे तक ले जाने की कोशिश करता है । डॉ. अजय शर्मा जी ने बहुत सूझबूझ के साथ इस उपन्यास में औपन्यासिक सता को कायम रखा है। ऐसा लगता है कि जैसे यह विशिष्ट उपन्याय अने रचना संसार के कारण अपनी अर्थवता अवश्य खोज लेगा। घटनाओं का क्रम पाठक को बराबर उद्वेलित करता रहता है। उपन्यास कहीं भी बोझिल, दार्शनिक नहीं होता , बल्कि अनवरत विचारों की श्रृंखला को खुली अंतदृष्टि से प्रस्तुत करता है।

डॉ. अजय शर्मा जी का तीसरा उपन्याय 'आकाश का सच' कई दृष्टियों से महत्वपूर्ण कृ ति है। इस कृति में अतीत वर्तमान और भविष्य एक ऐसी त्रिकोण का निर्माण करते हैं , जिसमें देश काल और वैचारिक परिवर्तन ऐसी सत्यगाथा को कलात्मक दृष्टि में रूपांतर कर देते हैं। जिनका सीधा संबन्ध वर्तमान के यथार्थ से होता है। आकाश का सच उस रचना को पारदर्शी बनाता है जिसमें व्यक्ति समाज एवं शŽद अपनी समस्याओं से जूझता भी दिखाई देता है तथा उन मूल्यों का संक्रमण □ी परत दर परत □ुलता जाता है जिसमें पत्रकारिता के रंग भी है। पंजाब की वर्तमान त्रास्दी और वह सब कुछ भी जिससे वर्तमान बौना बनता है

तथा वे सभी बुद्धिजीवि, पत्रकार, संपादक विचारहीन होकर अजीबो गरीब हरकतों का शिकार हो जाते हैं। 'आकाश का सच' वास्तव में इसी यथार्थ को जिन्दगी के निकट लाने में सफल हो जाता है। इस कृति के पिछे जो भावना काम कर रही है वह मंगलकारी है। इसलिए 'आकाश का सच' हमारे समय का एक महत्वपूर्ण सामाजिक इस्तावेज है।

'बसरा की गलियों' डॉ. अजय शर्मा जी का चौथा उपन्यास है। डॉ. अजय शर्मा ने इस उपन्यास में न केवल क्षितिजों केा ही हुआ है, बल्कि उपन्यास चिंतन की वैचारिकी को विस्तार भी दिया है। लेखक और पाठक के लिए यह स्थिति चुनौतिपूर्ण है। 'बसरा की गलियां' का कथ्य उस नई चेतना से जुड़ा हुआ है, जिसका एक हाशिया एशिया के देशों को प्रभावित करता है, तो दुसरी और यूरोप के देश भी इससे अनछुए नहीं हैं। लेखक ने कथा के कई पहलुओं को एक ऐसे सुत्र से बाँधा है, जो कभी युद्ध के उन्माद को प्र□ार बनाते हैं तो कभी इंसानियत के लिए किए गए प्रयत्नसें को अलोकित करते हैं। बुशरा एक ऐसी पात्र है, जिसके माध्यम से स्थितियों का चरमोत्कर्ष देखा जा सकता है। इस उपन्यास के पात्रों का रचना संसार भी बड़ा दिलचस्प है। वे हर पल आत्मविश्लेषण करते हैं, निश्चित निष्कर्ष पर पहुंचते हैं और दोबारा स्थितियों को आत्मसात कर लेते हैं। परन्तु युद्ध और राजनीति पूरे उपन्यास की जमीन को उन संदर्भों से जोडती है जिसके कारण पूरा विश्व अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष करता हुआ दिखाई देता है। यह उपन्यास सामाजिक यथार्थ की सश€त अभिव्यि€त करता है। डॉ. अजय शर्मा का यह उपन्यास हिन्दी उपन्यास की धारा में अलग खडा दि□ााई देता है। वैश्वीकरण के जिस दौर से हम गुजर रहे हैं, उसका सांस्कृ तिक एवं समाजिक परिवेश इस उपन्यास के माध्यम से अभिव्यक्त भी हुआ तथा नई ऐतिहासिक चुनौतियों को स्वीकार भी करता है। 'सरा की गलियाँ ' उपन्यास इंसान की उस जीजिवषा का संवेदनशील संवाद प्रस्तुत करता है, जिसके द्वारा आने वाली पीढियों अपने उस मन्तव्य की निशानदेही कर लेंगी, जिसके संकेत इस भविष्योन्मुखी महत्वपूर्ण क्रति में रेखांकित हुए हैं।

'काल कथा' डॉ. अजय शर्मा जी का पांचवां उपन्यास है। अकादमिक जगत में इस उपन्यास के द्वारा डॉ. अजय शर्मा की उपन्यास कला को स्वीक्रति भी मिली है और स□मान भी। उपन्यास अब एक ऐसी इकाई नहीं रहा, जिसके आधार पर विधागत निर्णय लिए जा सकें। 'काल-कथा' की वैचारिकता का यही बिंदु उल्लेखनीय है। समय के सच को डॉ. अजय शर्मा जी खूब पहचानते हैं। पंजाब के संदर्भ में यह उपन्यास कई ऐतिहासिक तथ्यों पर पूर्ण विचार भी प्रस्तुत करता है तथा उनकी सांस्कृतिक पहचान में कई नए आयामों को भी जोडता हैँ। 'काल कथा' अतीत, वर्तमान और भविष्य को इतिहास के रेखिक सिद्धांत के अनुरूप बिलकुल सही दिशा में अग्रसारित भी कर देती है तथा पात्रों और स्थितियों का समीकरण देश-काल के सीमांकन में प्रस्तुत कर कथा के उन नए आयमों को भी स्पर्श कर लेती है, जिसका इकरार उपन्यासकार पात्रों के माध्यम से पाठकों के साथ बराबर करता चलता है। 'काल कथा' का यह नया हाशिया है। 'काल-कथा' कहीं भी खंडित नहीं होती। राजनीति, समाज और धर्म अपने अपने चौखटे में स्थित होकर खंड विशेष कथा-शिल्प का रचना संग्रह भी अद्‌भुत है। पशु-पक्षियों के अनेक प्रतीक उपन्यास की कथा को गहराई देते हैं। 'काल-कथा' सपेक्ष है।

डॉ. अजय शर्मा जी का छठा उपन्यास 'शहर पर लगी आँखें' है। यह उपन्यास उनके समकालीन परिवेश की बोलती तस्वीर है। पंजाब के छोटे बडे गावों शहरों की तस्वीर देखनी हो तो अजय शर्मा जी के उपन्यासों से सश€त माध्यम कोई नहीं हो सकता। आजादी के बाद का पंजाब उनके नामों के पीछे छिपे इतिहास का दस्तावेज है, यह उपन्यास। इन में पंजांब का दिल घडकता है, पंजाबियों के जीवन की छोटी बडी हकीकतों इनमें मौजूद हैं। इसमें पंजाबीयों की रोजमर्रा की जिन्दगी की छोटी छोटी छवियां कैद हैं। गांव के लोगों का ट्राली या ट्रक में भरकर डेरे पर सेवा के लिए जाना, फीरी जैसे पागलों का दिन भर इधर उधर भटकना, लोगों का उन्हें छेडना, उनके विवाह की बातें कर-करके उन्हें तंग करना, स्कूटर पर कपड़ा मारना या डा€टर का बैग स्कूटर पर रखना जैसे काम करना या □ाली समय में €लनिक में रखे टी.वी. को देखते रहना, ये कुछ ऐसे दृश्य है जो पंजाब के किसी भी गाँव में आसानी से उपलŽध हो जाएगे। वास्तव में सत्य को उजागर करना ही रचनाकार का धर्म है। इस धर्म का निर्वाह निश्चय ही सरल नहीं, यह तलवार की धार पर चलने का सौदा है। हर युग का मीजीवडा,रचनाकार इस चुनौती को स्वीकार करता है। वह 'कागद की लेखी' पर नहीं 'आंखिनी की देखी' पर विश्वाश करता है। जान हथेली पर धरता है और उस आखिन देखी को अनुभव की आंच में तपाकर अपने साहित्य में व्यक्त कर देता है।

डॉ. अजय शर्मा की उपन्यास यात्रा अभी जारी है। काल कथा इस यात्रा का महत्वपूर्ण पडाव है। मुझे विश्वास है कि 'काल-कथा' अन्य उपन्यासों की उपेक्षा लेखक को अधिक □याति प्रदान करेगा और डॉ. अजय शर्मा को किसी महा उपन्यास की ओर बढ़ने की शक्ति भी देगा।

अध्यायीकरण की रूपरेखा

:.क प्रबन्धपूर्वा

क: डॉ. अजय शर्मा व्यि€तत्व और क्रतित्व

क.क व्यि€तत्व
क.ख कृतित्व

ख काल चेतना : सैद्धान्तिक अध्ययन
खक काल
खक.क काल: मूल शŏद, रूपान्तर एवं व्युत्पत्ति
खक.ख काल: अर्थ-निरूपण
खक.फ काल: विविध पर्याय
खक.ब काल: परिभाषांकन
खक.भ काल: स्वरूपांकन
खक.म काल: प्रभेद -निरूपण
खक.ख्र काल: उर्ध्वाधर -विखण्डन
खक.त्त काल: पौरस्त्य और पाश्चात्य चिंतन

खख चेतना
खखक चेतना: मूल शŏद रूपान्तर एवं व्युत्पत्ति
खखख चेतना: अर्थ -निरूपण
खखफ चेतना: परिभाषांकन
खखख चेतना: स्वस्पांकन

खफ काल -चेतना:
खफ.क काल -चेतना: स्वरूप एवं अभिप्राय
खफ.ख का2 तना: प्रकारीकरण
खफ.खक प्रतिपाद्य आयामी
खफ.खख स्थल आयामी
खफ.खफ पात्रअरायामी

फ डॉ. अजय शर्मा के उपन्यासों में प्रतिपाद्य आयामी काल-चेतना
ब डॉ. अजय शर्मा के उपन्यासों में स्थल आयामी काल-चेतना
भ डॉ. अजय शर्मा के उपन्यासों में पात्र आयामी काल-चेतना
म डॉ. अजय शर्मा के उपन्यासों में वैश्विक काल-चेतना

ख्र प्रबन्ध - उŏारा

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

क. अवस्थी, प्रेमा : मीमांसा दर्शन का उद्भव और विकास
कानपुर : सुरभारती प्रकाशन, क-त्त
ख अवस्थी, ब्रहममित्र : भारतीय न्याय शास्त्र एक अध्ययन,
दिल्ली : इन्दु प्रकाशन क-म्त्र
फ. अज्ञेय, सच्चिदानन्द : आल-वाल हीरानन्द वात्ज्ञयायन

दिल्ली : राजकमल प्रकाशन क-त्रक
ब. अज्ञेय, सच्चिदानन्द : भवन्ती हीरानन्द वात्ज्ञयायन
दिल्ली : राजपाल एण्ड संस क-त्रख
भ. अज्ञेय, सच्चिदानन्द : संवत्सर हीरानन्द वात्ज्ञयायन

नयी दिल्ली : नेशनल पŏलशिंग हाउस, क-त्रख.
अगिनहोत्री, श्री नारायण : उपन्यास तत्व एवं रूप विधान,
कानपुर : आचार्य शु€ल साधना सदन, क-म्ख
ख्र. अगिनहोत्री, श्री नारायण : हिन्दी उपन्यास साहित्य का शास्त्रीय विवेचन
आगरा : सरस्वती पुस्तक सदन, क-म्क
त्त. आप्टे, वामन शिवराम : संस्कृत हिन्दी कोश,वाराणसी:अमर पŏलकेशन,क--ब-. आर्य,
बलदेव : पुराण विमर्श, वाराणसी: चौख मा विद्याभवन, क-त्रत्त
क. आर्य, वेदज्ञ : कामायनी की परिभाषिक शŏदावली,
इलाहाबाद : लोकाारती प्रकाशन, क-म्त्त
क्क. कमल, कन्हैयालाल : गणितानुयोग, सांडेराव: आगम— अनुयोग प्रकाशन प्रथम संस्करण
क्ख कौर परमजीत : डॉ. अजय शर्मा के उपन्यास वस्तु और शिलप , आस्था प्रकाशन
क्फ. गुप्त , धर्मेन्द्र कुमार : पद्मचन्द्रकोश,
नई दिल्ली : मेहरचन्द पŏलकेशन्स, क-म्ख
क्ब गुप्त, एस. एन. : वैस्टन फिलासफी
जालंधर : डील€य पŏलशिंग हाउस , क--ब
क्भ. गौतम : कालचक्र
दिल्ली : प्रकाशन, संस्थान, ख
क्म. चतुर्वेदी, गिरिधर शर्मा : पुराण परिशीलन,
पटना : बिहार, राष्ट्र भाषा परिषद क-त्र
क्त्र. चुघ, सत्यपाल : प्रेमचन्दोŏार उपन्यासों की शिल्पविधि

इलाहाबाद : लोकभारती प्रकाशन, क–म्त
क्त. शर्मा, अजय : लकीर दे आर पार पंजाबी दे आर पार
क–. शर्मा ,अजय : चेहरा और परछाई, हिन्दी उपन्यास ख्क
ख. शर्मा , अजय : खुली हुई खिड़की, हिन्दी उपन्यास ख्ख
ख्क. शर्मा , अजय : आकाश का सच , हिन्दी उपन्यास ख्फ
ख्ख. शर्मा , अजय : बसरा की गलीयां, हिन्दी उपन्यास ख्ब
ख्फ. शर्मा , अजय : काल कथा हिन्दी उपन्यास ख्म
ख्ब. शर्मा , अजय : शहर पर लगी आँखें, हिन्दी उपन्यास ख्क
ख्भ. शर्मा , अजय : राख का परिंदा, उपन्यास ख्भ. जैन,
पन्नालाल : हरिवशपुराण काशी
ख्त्र. जैन, महेन्द्र कुमार : षडदर्शन समुच्चय,
काशी : भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, क–स्त्र
ख्त. जितेन्द्र वर्णी : जैनेन्द्र सिद्धान्त कोश,
वाराणसी : भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, क–ब्ब
ख–. झालटे, दंगल : उपन्यास समीक्षा के नये प्रतीमान
नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन क–त्त्र
फ. टंडन, प्रताप नारायण : हिन्दी उपन्यास कला,
फ्क. तिवारी, हरगोबिन्द : तुलसी शŽद सागर,
इलाहाबाद : हिन्दुस्तानी एकेड़मी, क–स्त्रब
फ्ख. दास, श्याम सुन्दर : हिन्दी शŽद सागर,
काशी : नागरी प्रचारिणी सभा, क–म्त्र
फ्फ. दूबे, तहसीलदार : स्वाायोŽार हिन्दी उपन्यास सहित्य में शिल्प विधि का विकास,
कराल : नटराज पŽलशिंग हाउस क–त्त्फ
फ्ब. धमर€खतेन भि€खुना : जातकट्ट कथा, भाग–क
काशी : भारतीय ज्ञानपीठ क–भ्क
दिल्ली : राजपाल प्रकाशन, क–म्म
फ्म. नायक, प्रवीण : यशपाल का औपन्यासिक शिल्प
आगरा : सरस्वती पुस्तक सदन, क–म्फ
फ्त्र. प्रणीता, भगवताग्निवेशन : चरकसंहिता,
दिल्ली : मोतीलाल बनारसीदास, क–स्त्र–
फ्त. पाण्डेय, राम सुरेश : महाभारत और पुराणों में सय दर्शन,
दिल्ली : नेशनल पŽलशिंग हाउस, क–स्त्रख
फ–. पाण्डेय , राम लग्न : बडा सुख सागर,
वाराणसी : श्री ठाकुर प्रसाद पुस्तक भण्डार, क–म्म
ब. पाण्डेय, सुधाकर : हिन्दी विश्वकोश
वाराणसी : नागरी प्रचारिणी सभा,क–म्ख
ब्क. पिल्ले, एन.सी.कुट्टन : पौराणिक संदर्भ कोश,
हैदराबाद : किरण प्रकाशन क–त्त्ब
ब्ख. बांदिवडेकर, चन्द्रकान्त : आधुनिक हिन्दी साहित्यः स्रजन और आलोचना
ब्फ बांदिवडेकर, चन्द्रकान्त : उपन्यासः स्थिति और गति
नई दिल्ली : पूर्वेदय प्रकाशन : क–स्त्रस्त्र
ब्फ. बुल्के,फादर कामिल : अंग्रजी हिन्दी कोश, रांची : कंथलिय प्रेस, क–स्त्रस्त्र
ब्भ. मीजा, भीष्म : उपन्यासकार वृन्दालाल वर्मा और लोक जीवन
करनाल : नटराज पŽलशिंग हाउस, क–त्त्भ
ब्म. मिश्र, छगशिंकर : अज्ञेय का उपन्यास साहित्य
बंगलौर : विद्यामन्दिर प्रकाशन क–स्त्रम
ब्त्र. मिश्र, विद्यानिवास : भारतीय चिन्तनधारा दिल्ली, प्रभाव प्रकाशन, क––ब
ब्त. मिश्र, शिव कुमार : वृन्दावनलाल वर्मा, उपन्यास और कला
कानपुर : रवि प्रकाशन, क–भ्म
ब–. मुनि, श्री प्रमाणसागर : जैन धर्म और दर्शन
दिह्ली : शिक्षा भारती प्रकाशन क––म
भ. योगी सत्यभूषण : मनु स्मृति
दिह्ली : मोतीलाल बनारसीदास, क–स्त्र
भ्क. राधाकृष्णन : भारतीय दर्शन –क
दिल्ली : राजपाल एण्ड संघ क–स्त्रफ
भ्ख. राधाकृष्णन : भारतीय दर्शन –ख
दिल्ली : राजपाल एण्ड संघ क–स्त्रख
भ्फ. राय, कुमार : महाभारत कोश, वाराणसी : चौखभा संस्कृत सीरिज
गोपाल : उपन्यास का शिल्प,
पटना : बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, क–स्त्रफ
भ्भ. राय, विवेक : हिन्दी उपन्यासः उŽरराती की उपलŽधयां
इलाहाबाद : राजीव प्रकाशन , क–त्त्फ
भ्म. वर्मा, कान्ति : स्वातन्त्रयोŽार हिन्दी उपन्यास,
दिल्ली : रामचन्द्र एण्ड कपनी, क–म्म
भ्त्र. वर्मा, धीरेन्द्र : हिन्दी विश्वकोश
वाराणसी : नागरी प्रचारिणी सभा, क–म्ख
भ्त. वर्मा निर्मल : ढलान से उतरते हुए,
नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, क–स्त्रफ
भ–. वर्मा, सुधीन्द्र : तत्वमीमांसा,

लखनउ : हिन्दी समीति, क–म्स्त्र
म्. वर्मा, सुधीन्द्र : मानक हिन्दी कोश,
प्रयाग : हिन्दी साहित्य स□मेलन : क–म्ब
म्क. वेदव्यास : नूतन सुख सागर
दिल्ली : देहाती पुस्तक भण्डार, क–त्त्स्त्र
म्ख. वैध, गुरूदŽा : इतिहास में भारतीय पर□परायें,
नई दिल्ली : भारतीय साहित्य सदन, क–स्त्र
म्फ. श□ार्, म€खन लाल : हिन्दी उपन्यास: सिद्धान्त और समीक्षा
दिल्ली : प्रभात प्रकाशन, क–म्म
म्ब. शर्मा, सावित्री : भगवतीचरण वर्मा के उपन्यास उपलŽध और सीमाएं
पटना : ग्रन्थ निकेतन, क–म्–
म्भ. शर्मा, श्रीराम : पद्म पुराण–क
बरेली : संस्कृति संस्थान क–स्त्र
म्म. शर्मा, श्रीराम : पद्म पुराण–ख,रेली: संस्कृति संस्थान क–स्त्र
म्स्त्र. शर्मा, श्रीराम : कर्म पुराण,बरेली: संस्कृति संस्थान क–स्त्र
म्त्त. शर्मा, श्रीराम : अग्नि पुराण
बरेली : संस्कृति संस्थान क–म्त्त
म्–. शर्मा, श्रीराम : मार्कण्डेय पुराण–ख
बरेली : संस्कृति संस्थान क–स्त्र
स्त्र. शर्मा, तुलसीराम : मार्कण्डेय पुराण–ख
बरेली : संस्कृति संस्थान क–म्–
स्त्रक. शर्मा, श्री शेषराज : तर्क संग्रह
वाराणसीह : चौख□भा सुरभारती प्रकाशन, क–––
स्त्रख. शास्त्री , उदयवीर : न्याय दर्शन
दिल्ली : गोविन्द हासानन्द प्रकाशन, क––क
स्त्रफ. शास्त्री , अनन्त मराल : विज्ञानिक दर्शन का उदय
गाोपाल : मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, क–स्त्र
स्त्रब. शास्त्री , दुण्ढिराज : वैशिषकसूत्रोपस्कार
वाराणसी : चौख□भा संस्कृत सीरिज, क–म्–
स्त्रभ. शास्त्री , भगवद्दास : श्री मूलदास जी की अनमै वाणी
बीकानेर : संत साहित्य संगम, क–म्–
स्त्रम. शास्त्री, श्रि निवास : न्यायवार्तिका–ख
गाजियाबाद : इण्डोविजन प्राईवेट लिमिटेड क–त्त्स्त्र
स्त्रस्त्र. शास्त्री, भगवद्दास : हरिराम दास जी की अनुभव वाणी
बीकानेर : संत साहित्य प्रचार ट्रस्ट, क–त्त्ख
स्त्रत्त. शास्त्री,राजवीर : पातंजल योग दर्शन
दिल्ली : आर्य साहित्य प्रचार ट्रस्ट, क–त्त्ख
स्त्र–. शु€ल, ओम : हिन्दी उपन्यास की शिल्पविधि का विकास
कानपुर : अनुसंधान प्रकाशन, क–म्ब
त्त. शु€ल, रामलखन : हिन्दी उपन्यास कला,
दिल्ली : सन्मार्ग प्रकाशन, क–स्त्रख
त्त्क. स€सेना , उषा : हिन्दी उपन्यासों का शिल्पगत विकास, इलाहाबाद
त्त्ख. सिंह महेन्द्र : डॉ. अजय शर्मा का कथा संसार
साहनी, भीष्म : आधुनिक हिन्दी उपन्यास,
नयी दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण
त्त्ब. सिंह, चन्द्रधारी : कारिकावली,
दिल्ली : भारतीय बुक कार्पोरेशन, प्रथम संस्करण
त्त्भ. सिंह, महीप : हिन्दी उपन्यास: समकालीन परिदृश्य,
त्त्त. सिंहल, शशिभूषण : हिन्दी उपन्यास की पकृŽियां,
आगरा : विनोद पुस्तक मन्दिर, क–स्त्र
त्त–. सुखबाल, राधारानी : वल्लभ स□प्रदाय और उसके सिद्धान्त,
Žयावर : पण्डित राम प्रसाद शास्त्री चैरिटेबल ट्रस्ट, क–त्त
–. सूर्यकान्त : संस्कृत हिन्दी अंग्रेजी कोश,
नई दिल्ली : ओरियंटल लांगमैन, क––भ
–क. श्रीववास्तव , परमानन्द : उपन्यास का पुर्वजन्म,
नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन, क––म
–ख. त्रिपाठी, श्रीराम : मत्स्य पुराण
प्रयाग : हिन्दी साहित्य अकादमी, क–ब्
–फ. त्रिवेदिन, क्षेमकरणदास : अर्थवेद,
प्रयाग : प. क्षेमकरण दासत्रिवेदिन